ISSN: 0973-0583

वैश्विक शान्ति में भगवान बुद्ध का योगदान

डॉ० वीरेन्द्र पाण्डेय

एस. के. आर. कॉलेज, बरबीघा, शेखपुरा

भगवान बुद्ध के द्वारा लोकमंगल के लिए अनेक दुष्कर कायों का सम्पादन किया गया। अनेक पारमिताओं को पूर्ण कर बोधि लाभ किया तथा ''बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय लोकानुकाम्पाय अत्थाय हिताय देवमनुस्सान'' भिक्षुओं को चारिका करने का निर्देश दिया। इससे स्पष्ट ज्ञात होता है कि भगवान की समस्त देशना लोकमंगल एवं शान्ति के लिए प्रवर्तित हुई है। उन्होंने अपने प्रथम उपदेश में ही चार आर्यसत्यों का निरुपण किया क्योंकि उन्होंने अपने करुणा चक्षु से समस्त लोकों को देखा कि समस्त प्राणी जाति, जराभिभुत हो दुख को प्राप्त कर रहे हैं। इस सत्य से हम कथमपि अपलाप नहीं कर सकते कि सभी सुख एवं मंगल की अभिलाषा करते हैं, पर ऐसा सम्भव नहीं दिखता क्योंकि सम्यक् प्रज्ञा के अभाव में दुख से निवृत नहीं हो सकती। इसीलिए भगवान् बुद्ध ने द्वितीय आर्यसत्य दुख समुदय (दु:ख के कारणों) का निर्देश किया। इन कारणों के अशेष निरोध से दु:ख का अशेष निरोध बतलाया तथा दु:ख निरोधगामिनी प्रतिपदा की देशना कर मनुष्य को सन्मार्ग पर चलने का उपदेश दिया। उन्होंने जिस मार्ग का निरूपण किया वह शील, समाधि एवं प्रज्ञा की शिक्षा से समन्वित है। यह दु:ख निवृत्ति का मार्ग है तथा इहलौकिक वैभव तथा लोकोत्तर निर्वाण के लिए अमृतोपम औषध है। इस मार्ग के अनुशरण से सर्वत्र मंगल का आश्वासन है। बुद्ध द्वारा प्रवर्तित धर्म आदि में, मध्य में एवं अन्त में कल्याणकारी है। यह धर्म मैत्री, मुदिता, करुणा एवं उपेक्षा की भावना से युक्त है जिसमें सबकी मंगल की कामना है। भवतु सब्ब मंगला। बौद्ध धर्म सबका अभ्युदय तथा सबकी दु:ख निवृत्ति का मार्ग बतलाता है। अत: लोकमंगल एवं शान्ति बौद्ध धर्म की मूल भावना है।

लोक शब्द का बौद्ध वांग्मय में अनेक अर्थ प्राप्त होते हैं। लुज्जन पलुज्जनट्ठेन लोको अर्थात् जो क्षय-व्यय सम्पन्न है, जहाँ उत्पत्ति एवं नाश का क्रम चलता रहता है, उसे ही लोक कहते है। सामान्यतया जहाँ स्थावर, जंगम प्राणियों का निवास होता है वह लोक है। विशुद्धिमग्गो में तीन लोक बताया गया है।

1. संस्कार लोक
2. सत्वलोक
3. अवकाशलोक।

तयो लोका-संखारलोको, सत्तलोको, ओकासलोको चूँकि भगवान् बुद्ध इन लोकों को जानने वाले हैं, इसीलिए इन्हे लोकविदु कहा जाता है। समस्त लोकों को जानकर मंगल के लिए मार्ग का प्रतिपादन किया है। अत: कारुणिक शास्ता ने देव और मनुष्य के लिए सुख एवं मंगल की भावना से धर्मोपदेश किया है। ''भगवा अरहं सम्मासम्बुद्धो विज्जाचरण सम्पन्नो सुगतो लोकविदु अनुत्तरो, पुरिसदम्म सारथि सत्था देवमनुस्सानं बुद्धो भगवाति'' कहकर साधक बुद्ध गुणों के अनुस्मरण के द्वारा अपने को निर्मल बनाता है। लोकमंगल का अभिप्राय है कि जगत के सम्पूर्ण प्राणी बुद्ध द्वारा प्रतिपादित मार्ग से दु:ख से मुक्त होकर परमसुख एवं शान्ति को प्राप्त कर सकते हैं।

बौद्ध धर्म के द्वारा इन लोकों में मंगल की अवाप्ति की जा सकती है। अविद्या के कारण अमंगल प्रसूत होते हैं। अज्ञानता के आवरण को प्राप्त होता रहता है, जिससे सत्यमार्ग को छोड़कर असत्य मार्ग का अवलम्बन कर लेता है। बौद्धधर्म सन्मार्ग पर चलने की प्रेरणा देता है। शील के समादान से मनुष्य मानवता के गुणों से समलंकृत हो जाता है, शीलवान मनुष्य समादार का पात्र होता है और स्व-पर कल्याण से समुपेत हो जाता है। शील सम्यक् वचन, सम्यक् कर्म एवं सम्यक् आजीविका है। इस जीवन विधि को अपनाने से सर्वत्र मंगल एवं कल्याण को आयत्त किया जा सकता है। सभी अकुशल कमों का त्याग, सम्पूर्ण कुशलकर्मो का संचयन और चित्त को निर्मल बनाते रहने से काय, मन, वचन शुद्ध हो जाते हैं और इनकी शुचिता ही शील है। शील सभी कुशल धर्मों का आधार है। पालि ग्रन्थों में शील के विविध प्रकार उपलब्ध हैं। उपासकों के लिए पंचशील तथा वीतराग, भिक्षुओं के लिए अन्य अनेक प्रकार के शील निर्दिष्ट हैं। इसमें पंचशील सामान्य जन के लिए अत्यंत उपयोगी है तथा समाज के

लिए अत्यंत मंगल साधक हैं। इनमें पंचशील सामान्यजन के लिए अत्यंत उपयोगी है तथा समाज के लिए अत्यंत मंगल साधक है। अहिंसा, त्याग, ब्रह्मचर्य, सत्य तथा मादक द्रव्य का परिवर्जन पंचशील है। इनका आधुनिक परिवेश में अत्यधिक उपादेयता है। आज की समस्याओं का समाधान इनसे संभाव्य है।

पंचशील में प्रथम पाणातिपाता वेरमणी यह प्राणीवध से विरत रहने का व्रत है। सभी प्राणियों के प्रति प्रेम और मैत्री अहिंसा का आचरण है। हिंसा का मूल द्वेष है इसे जानकर अद्वेष की भावना करनी चाहिए जिसमें सभी प्राणियों के प्रति प्रेम और सद्भावना स्थापित होगी। मैत्री परहित कामना है तथा द्वेष द्रोह से निस्सरण । मैत्री भावना को भगवान् बुद्ध ने सर्वाधिक महत्व दिया है। अहिंसा ही जीवन-यापन पर्यवदात विद्या है, इससे समाज में एक दूसरे के प्रति सद्भावना, सहभागिता एवं सार्वजनिक जीवन की उदात्त भावना का उद्रेक होता है। भारत सदा विश्व के साथ मैत्री भावना से अभिसम्बद्ध रहा है। आज विश्व निशित अस्त्रों एवं प्राणघातक शस्त्रों की प्रतिस्पर्धा और प्रतियोगिता की चरम सीमा पर दृष्टिगत रहा है, सर्वत्र अशांति का वातावरण व्याप्त है, ऐसी स्थिति में पंचशील में से प्रथम को जीवन में आचरित की जाय तो इस प्रत्यसन्न सामाजिक संकट को निराकृत किया जा सकता है। अत: आचरणीय है। इससे द्वेष बुद्धि का निरसन तथा प्रेम एवं मैत्री भाव का उदय सम्भाव्य है जो स्वयं के लिए भी मंगल और कल्याणकारी है। इसी से विश्व बन्धुत्व विश्व प्रेम की भावना परिकल्प्य है। अहिंसा सम्पूर्ण धमों का सार है। चार ब्रह्मविचारों में मैत्री ब्रह्मविहार अन्यतम है।

पंचशील का दूसरा चरण अदिन्नादाना वेरमणी है जिसका अर्थ स्तेयकर्मराहित्य है। त्याग की भावना भारतीय संस्कृति का मूल है। परिग्रह दो शील्य है और अपरिग्रह सर्वधा स्तुत्य आचरण है। परिग्रह के कारण समाज में सम्पन्नता एवं विपन्नता व्याप्त है। त्याग के अभाव में आर्थिक एवं सामाजिक वैश्णव अपाकृत हो सकता है।

अव्यभिचार पंचशील का तीसरा चरण है। यह श्रेष्ठ आचरण का द्योतक है, किसी भी समाज का राष्ट्र का बल और उत्साह का द्योतक है। ब्रह्मचर्य के अभाव में अराजकता दू शीलता जैसी विश्वव्यापी समस्याओं ने समाज को क्षुब्ध कर दिया है। अतएव सम्यक् प्रयत्न के द्वारा अव्यभिचार की महत्ता को प्रतिष्ठापित किया।

पंचशील का चतुर्थ महत्वपूर्ण अंग सत्यवादिता है। (मुसावादा वेरमणी)। प्राय: सभी महापुरुषों ने सत्य की महिमा का गुणगान किया है। सत्य यथातथ्य एवं यथाभूत को प्रतिपादित करता है। अत: सत्य ही श्रेष्ठ है, कल्याणकर है ऐसा समझकर सत्य का अनुगमन करना अपना एवं सामाजहित के लिए अत्यंत लाभकर है। नहि सत्यात परो धर्म सत्य से परे और कोई धर्म नहीं है। सत्य मनुष्य के वाणी का अलंकार है, सत्यवादी की सर्वत्र प्रशंसा होती है। सुभाषित वचन को भगवान बुद्ध ने उत्तम मंगल कहा है।

पंचशील का पाँचवा अंग मद्यपान से विरक्ति है। मादक द्रव्यों के सेवन से मनुष्य प्रमत एवं विवेक रहित हो जाता है। इसीलिए सुरामेरेयमज्जपमादटठाना वेरमणी का शील से अन्यतम स्थान है। मद्यपायी की चेतना विघटित हो जाती है और मद्यपोषक द्रव्यों के क्रय के कारण आर्थिक विपन्नता घेर लेती है। आज के परिपेक्ष्य में विशेषकर युवा वर्ग में मद्यपान के कारण अवांछित उच्श्रृंखलता समाहित हो गई है। यहाँ तक की जीवनहानि के समाचार अनुदिन प्राप्त होते रहते हैं। विष से भी भयावह वस्तु समझकर मद्यपान से विरत रहना अपने लिए एवं समाज के लिए मंगलकारी है। अत: मद्यपान से विरत्ति शील का पालन श्रेष्ठ जीवन के उदात्तीकरण के लिए नितांत उपादेय है।

उपर्युक्त विवरणों से स्पष्ट है कि बौद्ध धर्म आज की समस्याओं के समाधान में अपूर्व योगदान करने में समर्थ है। विश्वबंधुत्व और विश्वप्रेम का एकमात्र यही सम्यक् साधन है। इनके आचरण से प्रतिस्पर्धा और प्रतिहिंसा की भावना सर्वथा नष्ट हो सकती है। विश्व के लिए इनका आचरण अत्यंत मंगल का सृजन करने में समर्थ है, इससे विश्व की समस्याओं का समाधान हो सकता है। बौद्ध धर्म आद्यनत कल्याण एवं मंगल प्रदान करने वाला है। यह स्वयं को तो कल्याण मार्ग पर चलने की प्रेरणा देता ही है औरों को भी कल्याण मार्ग पर प्रतिपन्न कर दु:खों से मुक्ति का मार्ग बतलाता है। इसलिए मैं भी बौद्ध धर्म का अनुयायी हो गया हूँ।

निष्कर्ष:

अत: यह आदि, मध्य एवं अवसान मंगल एवं कल्याण का मार्ग प्रशस्त कर सबके मंगल के लिए प्रवर्तित है। शील, समाधि एवं प्रज्ञा से समुपेत बुद्ध प्रवेदित धर्म लोकमंगल एवं शान्ति में अपूर्व योगदान करने में पूर्णत: समर्थ है। केवल इसे धारण एवं इसका अनुसरण करने की आवश्यकता है। इसीलिए कहा गया है कि धम्मपीति सुखं सेति विपपसन्नेन चेतसा। अरियप्पवेदेति धम्मे सदा रमति पण्डितो। धर्म की धारण करने वाला प्रसन्न एवं अनविल चित्त ही सुख से सोता है। बुद्धिमान मनुष्य आर्यो द्वारा प्रतिपादित धर्म में सदा रमण करता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची :

1. म0 व0 पृ013
2. म0 व0, पृ0-13, 23
3. वि0 म0, पृ0-1

   लोकाहिताया ति अनमतग्गे संसारे वट्टदुक्खेन अच्चन्त पीन्डितं सत्तालोकं तम्हा दुक्खतो माचेत्वा निब्बान सुखभागिमं करिस्सामीति एवं सत्तलोकस्स हितकरणत्थाय। सा0 बी0 टी0, पु-8
4. तत्थ इन्द्रिबद्धानं खन्द्यानं समूहो सन्ता च सत्तलोको। रूपादीसु सत्तविसत्तताय सत्तो, लोकोयन्ति एत्थ कुसलाकुसलं तब्बियाको चा हि लोको। अनिन्द्रियबद्धांन रूपादीनं समूहो सन्तानो च ओकासलोको लोकीयन्ति एत्थ तसा, थावरा, तेसञ्व ओकासभूतो ति। वि0 सु0 म0 टी0 434
5. तथा हेस एकं चक्कमानं आयामतो च वित्थारतो च योजनानं द्वादससतसहससनि चतुतिंससत्तानिच पञ्ञासञ्व योजनानि-वि0 सु0 म0, पृ0-438
6. यावता चन्दिसुरिया परिहरन्ति दिसा भन्ति विरोचमाना।

   ताव सहस्सधा लोको एत्थ ते वत्तति वसो। म0नि0, 1,5,9। वि0म0 435
7. दान-सील-भावना-अपचायन-वेय्यावच्च-पत्तिदान-पत्तानुमोदान- धम्मसवन- धम्मदेसना दिट्ठञ्जुकम्मबसेन दसविधं होति। अ0 सं0 5. 58।
8. अभि0 सं0, 479, 781
9. अभि0 सं0, पृ0 72
10. वि0म0, भा0। पृ0 410, 411
11. प्रशसताचरणं नित्यं अप्रशसत विवर्जनम्।

    एतच्च मङ्गलं प्रोक्तं ऋषिभि: तत्त्वदेर्शिभि:।।
12. सीलं सब्बेसं कुसलानं धम्मानं आधारो

    अयं पतिट्ठा प्राणिनं इदं च मूलं कुसलभिवुड्डिया।

    मुखं चिदं सब्बाजिनमुसासने, यो सीलक्खनधो वर पातिमोक्खो ति। वि0 म0
13. सुखिनो वा खोमिनो होन्तु, सब्बे सत्ता भवन्तु सुखितत्ता। सु0वि 1, 8

    सब्बादिसा अनुपरिग्गम चेतसा नेवझग्गा पियतरतना क्वचि एवं पियो पुथु अत्ता पेरसं, तस्मा न हिंसे परमतकमो। सं0 नि0, 3,1,8
14. धर्म समासतोऽहिंसा वर्णयनित तथागता (चतु:शतक) 51
15. यो पाणमतिपातेति, मुसावदञ्व भासति।

    लोकं अदिनामादियति परदारञ्व गच्छति।

    सुरामेरयपानञ्व यो नरो अनुयुञ्जति।

    इधवमेसो लोकस्मिं मूलं खणति अतनो। ध0 प0, पृ0-135
16. मुसावादं पहाय मुसावादा पटिविरतो समनो गोतामे सच्चवादी सच्च सन्धो थे तो पञ्चयिको अविसंवादको लोकस्सा ति। दी0नि, पृ0 5
17. सुभासितं उत्तममाहु सन्तो, धम्मं भणे नाधम्मं तं दुतियं।

    पिंय भणे नाप्पियं तं ततियं, सच्चं भणे नालिकं तं चतुत्थ (सुभाषित सू0) पृ0 110

    सच्चं वे अमतावाचा एस धम्मो सनन्तनो।

    सच्चे अत्थे च धम्मे च आहु सन्तो पतिट्ठिता।
18. मञ्जपाना च संयमो। मगलसुत्त।
19. इध भिक्खवे, तथागतो लोकं उप्पज्जति अरहं सम्मासबुद्धो विज्जाचरणसम्पनो सुगतो लोकविन्दु अनुत्तरो पुरिसदम्मसारथी सत्था देवमनुस्सानं बुद्धो भगवा। सो धम्मं देसेति आदिकल्याणं मज्झेकल्याणं परियोसानकल्याणं सात्थं सब्बञ्जनं केवलपरिपुण्णं परिसुद्ध ब्रह्मचरियं पकासिता। इतिवुत्तक, पु0-235
20. ध0 प0, पृ0-37

❖❖❖